ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 27 कुल पृष्ठ-8 18 से 24 अप्रैल, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 चै. शु.-14

आर्य समाज लाजपतनगर, नई दिल्ली के 62वें वार्षिकोत्सव पर चार दिवसीय कार्यक्रम का भव्य आयोजन सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्यअतिथि

आर्य समाज लाजपतनगर, नई दिल्ली के 62वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर गत 11 से 14 अप्रैल, 2019 तक वेद कथा एवं भजनों के माध्यम से भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री राजू वैज्ञानिक ने वेद कथा द्वारा वैदिक सिद्धान्तों की प्रभावशाली प्रस्तुति की। उनके साथ आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री सतीश सत्यम जी के ओजस्वी भजनों का कार्यक्रम भी अत्यन्त प्रशंसनीय रहा। प्रतिदिन प्रातः 7 से 8.30 बजे तक यज्ञ का अनुष्ठान पं. मेघश्याम जी वेदालंकार के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यज्ञ में यजमान बनने वाले परिवारों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्रदान की गई। 14 अप्रैल, 2019 रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् प्रसाद वितरण एवं जलपान की व्यवस्था की गई थी।

प्रातः 10 बजे, मयूर विहार भाजपा की जिलामंत्री श्रीमती नीलम सहदेव ने ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी *आर्यवेश जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य,* केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, श्री राजू वैज्ञानिक आदि विशिष्ट महानुभावों के अतिरिक्त सैकड़ों आर्यजन उपस्थित थे।

प्रातः 10.30 बजे से 1 बजे तक आयोजित विशेष कार्यक्रम का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के ओजस्वी उद्बोधन से हुआ। स्वामी जी ने 'मनुर्भव' की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य का शरीर मिलने मात्र से कोई व्यक्ति तब तक मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है जब तक कि वह मनुष्यता का कार्य न करे। आज समाज में इंसान ढूंढ़ने पर भी नहीं मिलते। इन्सान की शक्ल में सर्वत्र हैवान दिखाई देते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि मानव समाज में सुख और शांति स्थापित करने के लिए मनुष्यों में मानवीय गुणों को क्रियान्वित किया जाये और प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्यों एवं अन्य जीव–जन्तुओं के प्रति सौहार्द एवं सद्भावना का व्यवहार करें। स्वामी आर्यवेश जी ने अनेक उदाहरण एवं दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों से विहीन होकर मनुष्य शैतान बनता जा रहा है। उदाहरण के रूप में उन्होंने कहा कि शराब के नशे में यदि कोई बाप अपनी बेटी के प्रति दुष्कर्म की दुर्भावना अपने मन में लाता है तो वह मनुष्य के बदले शैतान ही कहा जायेगा। इसी प्रकार विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले बड़े–बड़े अधिकारी, नेता, धर्मगुरु एवं धनवान लोग इंसानियत से कोसों दूर भागते नजर आ रहे हैं। यह सबसे अधिक चिन्ता की बात है इसीलिए इस ज्वलन्त मुद्दे को लेकर आर्य समाज 'मनुर्भव' की भावना को जन–जन के हृदय में उतार देना चाहता है। मनुष्य बनने के लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति मनुष्य जीवन के महत्त्व एवं सार्थकता को भली प्रकार समझे और उसी के अनुरूप अर्थात् मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने और उपयोगी बनाने के लिए उन मूल्यों को अपने जीवन में उतारे जो उसे पतन के बदले उन्नति की तरफ ले जा सकते हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि अष्टांग योग के पहले दो अंगों यम, नियम को अपने जीवन में आचरण में लाने के लिए सभी को गम्भीरता से प्रयत्न करना चाहिए। यम हमें औरों के प्रति व्यवहार करना सिखाते हैं तथा नियम हमें अपने प्रति व्यवहार करना सिखाते हैं। जब हम औरों के प्रति अपना व्यवहार में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि का अनुष्ठान करेंगे तो पूरे समाज की ओर से हमें प्रेम एवं सद्भाव प्राप्त होगा और हमारी सामाजिक उन्नति होगी तथा नियम के अनुसार जब हम शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान आदि का पालन करेंगे तो हमारी शारीरिक एवं आत्मिक उन्नति होगी।

स्वामी आर्यवेश जी का आर्य समाज के प्रधान श्री राजेश मेहदीरत्ता ने माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया तथा समाज के मंत्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री ने मंच का सुन्दर संचालन किया। स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के डिप्टी चेयरमैन श्री सुनील सहदेव, वैदिक विद्वान श्री राजू वैज्ञानिक, श्री अनिल आर्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्री सतीश सत्यम एवं श्रीमती प्रवीण आर्या के भजनों का भी सुन्दर कार्यक्रम रहा। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की सफलता के लिए आर्य समाज के प्रधान सर्वश्री राजेश मेहदीरत्ता, मंत्री श्री सुरेन्द्र शास्त्री, कोषाध्यक्ष श्री अनिल मिगलानी, स्त्री आर्य समाज की प्रधाना श्रीमती संतोष मलहोत्रा, मंत्राणी श्रीमती शकुन्तला नागिया, कोषाध्यक्षा श्रीमती शकुन्तला अरोड़ा आदि के अतिरिक्त दिल्ली की पूर्व महापौर श्रीमती शकुन्तला आर्या का आशीर्वाद एवं सर्वश्री पुरुषोत्तम लाल गुप्ता संरक्षक, उपप्रधान श्री भारतभूषण कपूर, आडिटर श्री कुलभूषण गुप्ता, मंत्री श्री अजय कपूर, मंत्री श्री सुरेन्द्र तलवार, अन्तरंग सदस्य श्री सतीश मनोचा, श्री भोलानाथ, श्री विश्वनाथ खन्ना, श्री वेद प्रकाश सूरी, श्री महेन्द्र बत्रा, श्री अमरनाथ कपूर आदि का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार, मनीषी एवं प्रखर लेखक डॉ. वेद प्रताप वैदिक की धर्मपत्नी उपनिषदों की पंडिता स्व. डा. वेदवती वैदिक की स्मृति में विशाल श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

उपनिषदों की विख्यात विदुषी प्रो. वेदवती वैदिक का दिनांक 4 अप्रैल, 2019 को आकस्मिक निधन हो गया है। दिल्ली के लीवर इंस्टीट्यूट में उनका उपचार चल रहा था। वे प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक की धर्मपत्नी हैं। उनकी आयु 70 वर्ष थी। उनका अंतिम संस्कार उसी दिन दयानंद घाट, लोदी इस्टेट पर संपन्न हो गया।

1977 से वे दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी महाविद्यालय में अध्यापन तथा श्री अरविन्द महाविद्यालय (सांध्य) में संस्कृत विभागाध्यक्ष रही हैं। प्रो. वेदवतीजी ने 1986 से दिल्ली विश्वविद्यालय के दक्षिण–परिसर में एम.ए. और एम.फिल. कक्षाओं में प्राध्यापन एवं शोध निर्देशन किया है। वे 'इंण्डियन क्रौंसिल आफ हिस्टोरिकल रिसर्च' की सीनियर फेलो (1980–83) रही हैं। 2013 में वे सेवानिवृत्त हुई थीं। उन्होंने साउथ एक्सटेंशन, दिल्ली के 'रामेश्वरदास गुप्त धर्मार्थ ट्रस्ट' के प्रबंध न्यासी के तौर पर समाजसेवा के अनेक अभियान चलाए हैं।

उपनिषद्–विद्या और वेदवती वैदिक एक–दूसरे के पर्याय बन गए थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में बी.ए. (ओनर्स) और एम.ए. करने के पश्चात् उन्होंने 'श्वेताश्वतर उपनिषद के भाष्यों का एक अध्ययन' विषय पर 1977 में पीएच.डी. की उपाधि प्रांप्त की। उपनिषद् विद्या पर उनके ये ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं– 'श्वेताश्वतर उपनिषदः दार्शनिक अध्ययन', 'उपनिषदों के ऋषि', 'उपनिषद् वाङ्मयः विविध आयाम', 'उपनिषदों के निर्वचन' और 'उपनिषद्युगीन संस्कृति'। उन्होंने भगवद्गीता का हिन्दी और अंग्रेजी अनुवाद किया है। इस ग्रंथ के अनेक संस्करण हो चुके हैं। उनका 1500 पृष्ठों का उपनिषद् महाकोश (एनसाइक्लोपीडिया ऑफ उपनिषद्स) हिंदी और अंग्रेजी में शीघ्र प्रकाश्य हैं।

इसके अतिरिक्त देश और विदेश की प्रतिष्ठित शोध–पत्रिकाओं, संपादित पुस्तकों और अभिनंदन ग्रंथों में वेद, उपनिषद्, भारतीय संस्कृति एवं पर्यावरण पर उनके अनेक शोध–पत्र प्रकाशित हुए।

उन्होंने अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया, त्रिनिदाद, कजाकिस्तान, थाईलैंड, सिंगापुर, मोरिशस, भूटान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक, तुर्की, लेबनान,

ताइवान, नेपाल, आदि देशों की यात्राएं भी की हैं। प्रो. वेदवती के देहावसान से संस्कृत एवं आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है।

उनकी स्मृति में अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर, नई दिल्ली में 9 अप्रैल, 2019 को सायं 4 से 6 बजे तक स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें देश के अनेक गणमान्य प्रतिष्ठित महानुभावों ने सम्मिलित होकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में मुख्य रूप से देश के प्रतिष्ठित गांधीवादी विचारक श्री सुब्बाराव , सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, एमिटी शिक्षण संस्थान के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार चौहान एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मृदुला चौहान, राष्ट्रीय निर्माण पार्टी के अध्यक्ष ठा. विक्रम सिंह एवं महामंत्री डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री शरद त्यागी, स्वामी सम्पूर्णानन्द, श्री ओम सपरा, राष्ट्रीय स्वाभिमान मंच के केन्द्रीय प्रभारी श्री जयदीप आर्य, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, कै. रूद्रसेन सिन्धु आदि महानुभाव उपस्थित थे। इस सभा के मंच का संचालन प्रसिद्ध वैदिक विदुषी डॉ. शशि प्रभा कुमार ने किया। इस अवसर पर प्रो. वेदवती के पति एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पत्रकार, मनीषी एवं लेखक डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने उपस्थित जनसमूह का धन्यवाद करते हुए प्रो. वेदवती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अत्यन्त भावुकतापूर्ण शब्दों में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वेदवती से विवाह के माध्यम से जब मेरा सम्बन्ध हुआ तब से लेकर उनके अन्तिम श्वांस तक मुझे कोई ऐसा क्षण याद नहीं आता जब मुझे उनके व्यवहार से किसी भी प्रकार की कोई असुविधा अनुभव हुई हो। वे एक अत्यन्त समर्पित, सौम्य एवं सहयोगी धर्मपत्नी ही नहीं बल्कि अनेक अवसरों पर मेरी मार्ग दर्शक बनकर भी रही। डॉ. वैदिक जी ने पधारे हुए समस्त महानुभावों का आभार व्यक्त करते हुए अपनी धर्मपत्नी प्रो. वेदवती को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर योगगुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने दूरभाष के माध्यम से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. वेद प्रताप वैदिक एवं सभी परिवारजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की और प्रो. वेदवती के व्यक्तित्व पर बड़े भावपूर्ण शब्दों में वक्तव्य दिया। स्वामी रामदेव जी के श्रद्धांजलि वक्तव्य को श्रोताओं ने लाउडस्पीकर के माध्यम से ध्यान से सुना।

श्रद्धांजलि सभा में उपस्थित जनसमूह से प्रो. वेदवती जी की लोकप्रियता, व्यवहार कुशलता एवं समाज के प्रति उनके स्नेह का परिचय मिल रहा था। ऐसी विदुषी के देहावसान पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने भी अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए अनुभव किया कि प्रो. वेदवती जी का देहावसान सम्पूर्ण आर्य जगत् के लिए अत्यन्त कष्ट का विषय है।

डॉ. रणवीर सिंह खासा के पूज्य पिता पहलवान सूरज सिंह जी का देहावसान सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी शांति यज्ञ में हुए सम्मिलित

रोहतक के प्रतिष्ठित डॉक्टर एवं स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम के परम सहयोगी डॉ. रणवीर सिंह खासा के पूज्य पिता पहलवान सूरज सिंह जी का गत दिनों देहावसान हो गया। वे 84 वर्ष के थे। उनकी स्मृति में दिनांक 14 अप्रैल, 2019 को डॉ. खासा के तिलकनगर, रोहतक स्थित निवास पर शांति यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें परिवार के शुभचिन्तकों एवं सम्बन्धियों ने सैकड़ों की संख्या में सम्मिलित होकर दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी विशेष रूप से शांति यज्ञ में सम्मिलित हुए थे। उनके अतिरिक्त प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. जगदेव सिंह वेदालंकार ने वैदिक रीति से शांति यज्ञ को सम्पन्न कराया और पहलवान सूरज सिंह जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बहन प्रवेश एवं बहन पूनम आर्या ने अपने भाव व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। डॉ. रणवीर सिंह खासा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता खासा ने भी अपने संस्मरण सुनाते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके स्मरण किया। स्व. चौ. सूरज

सिंह जी के छोटे पुत्र श्री बलवान सिंह खासा भी आस्ट्रेलिया से शांति यज्ञ में शामिल होने के लिए पधारे हुए थे।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने श्रद्धांजलि देते हुए स्व. पहलवान सूरज सिंह जी को एक मजबूत स्तम्भ बताया जिन्होंने अपने परिवार के सभी सदस्यों को अपने पैरों पर खड़ा होने की प्रेरणा दी। उनके सुपुत्र डॉ. रणवीर सिंह खासा आज पूरे समाज में जिस प्रकार से प्रतिष्ठा एवं यश कीर्ति को प्राप्त कर रहे हैं उसके पीछे उनके पूज्य पिता स्व. चौ. सूरज सिंह जी का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐसे पिता के निधन से निःसंदेह उनके पुत्रों–पुत्रियों एवं परिवार के सभी सदस्यों को हार्दिक वेदना होना स्वाभाविक है। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि पहलवान जी से वे जब–जब भी मिलते थे तो उनके साथ अनेक सामाजिक समस्याओं पर चर्चा होती थी और वे अपना स्पष्ट दृष्टिकोण रखते थे। स्वामी जी ने शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शांति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें। स्व. चौ. सूरज सिंह के पौत्र श्री अभिमन्यु खासा एवं पौत्री अदिति खासा ने जो विदेश में पढ़ रहे हैं वहीं से अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. रणवीर सिंह खासा ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित कर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

आर्ष कन्या गुरुकुल, हजारीबाग, झारखण्ड में – प्रवेश परीक्षा

आर्य समाज, हजारीबाग, झारखण्ड द्वारा 2011 से संचालित आर्ष परम्परा के संवाहक आर्य कन्या गुरुकुल, नवाबगंज हजारीबाग में प्रवेश के इच्छुक कन्याओं के लिए प्रवेश परीक्षा दो तिथियों में आयोजित की गई है। पहली प्रवेश परीक्षा 26 मई एवं दूसरी प्रवेश परीक्षा 16 जून को आयोजित की गई है। लिखित परीक्षा के साथ मौखिक परीक्षा भी उसी दिन ले ली जायेगी।

1. प्रवेशार्थी की आयु – 9 से 12 वर्ष
2. फार्म जमा करने की अन्तिम तिथि 15 मई तक।
3. प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण कन्या ही प्रवेश ले सकती है।
4. आर्ष पाठ विधि के साथ–साथ आधुनिक शिक्षा का समुचित प्रबन्ध।
5. फार्म एवं नियमावली प्राप्त करने एवं भरने के लिए प्रयोग करें –
   kanyagurukulhazaribagh@gmail.com
6. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें – 9430309525, 930888705

– पुष्पा शास्त्री, आचार्या

कहीं जनता के धन की लूट तो नहीं जनप्रतिनिधियों व उच्च अधिकारियों के वेतन भत्ते

– छगनलाल बोहरा

भारतीय जनमानस की उदासीनता ने राजनीति को ऐसा धन्धा बना दिया है, जिसमें बिना पूंजी लगाये, बिना किसी जवाबदेही, अयोग्य और धूर्त लोगों को अपार धन, सम्मान और अधिकार मिलते हैं। एक बार सांसद बन जाने वाला राजनेता 5 वर्षों में इतना धन, बाहुबल और इतना रसूख पैदा कर लेता है कि अपनी अकर्मण्यता और भ्रष्टाचार के बावजूद पुनः टिकट हासिल करता है, किसी पार्टी से टिकट नहीं मिले, तो अपनी अलग पार्टी बना जातीय समीकरण, धन और बाहुबल के सहारे पुनः जीत कर पहले से भी कई गुनी लूट मचाता है।

चुनाव के दौरान नेता बार–बार जनता के सामने यह घोषणा करता है कि वह जनता की सेवा करने के लिए चुनाव लड़ रहा है। जीतकर वह जनता की निःस्वार्थ सेवा करेगा। उसके वादों पर विश्वास कर जनता उसे वोट देती है, कार्यकर्ता उनके लिए रात–दिन काम करते हैं। सेठ, साहूकार, उद्योगपति, बड़े बिल्डर, भ्रष्ट अफसर, भूमाफिया, बड़े अपराधी, बड़े ठेकेदार, बड़े खानमालिक, बड़ी संस्थाओं के संचालक, बड़े चन्दाजीवी, सभी बढ़–चढ़कर उसे आर्थिक सहायता देते हैं और वह सांसद, विधायक, मंत्री बन जाता है। जिस दिन से वह अपने पद की शपथ लेता है, जनता के वादे को ताक में रखकर एक मात्र अपनी एवं अपने दानदाताओं की सेवा में जुट जाता है। *गरीब और गरीबी से उसका नाता टूट जाता है।* राजधानी में बहुत बड़ा बंगला, फोन, बिजली, पानी, हवाई यात्रा, वातानुकूलित रेलयात्रा, नौकर–चाकर, पी.ए., सुरक्षाकर्मी, कार सभी कुछ मुफ्त, संसद की कार्यवाही जिसके लिए जनता ने उसे चुना है, उसमें भाग लेने के लिए हजारों रुपयों का भत्ता, मासिक भत्ता, सदन की कैण्टीन में तकरीबन मुफ्त बेहतरीन खाना, समितियों के सदस्य बनने और उसकी बैठकों में भाग लेने का हजारों रुपये का मानदेय, अपने क्षेत्र में घूमने के लिए सरकारी कार, सदन में प्रश्न पूछने के लिए रिश्वत, क्षेत्र में विकास की राशि खर्च करने में कमीशन, नौकरी लगवाने, ट्रांस्फर करवाने, ट्रांस्फर रुकवाने में, खान दिलाने में, ठेका दिलाने में, स्पेक्ट्रम आवंटन हो या खेलों की सामग्री खरीद, सरकार बनवाने में, सरकार गिराने में या बचाने में हर कार्य में रिश्वत और कमीशनखोरी, जनता के धन की खुली लूट चारों हाथ–पैरों से, यह कैसा लोकतन्त्र है और कैसे जनप्रतिनिधि हैं? शाम की रोटी का जुगाड़ मुश्किल से कर पाने वाले गरीब का प्रतिनिधित्व करने वाले एक सांसद पर सरकारी खजाने का 56 लाख प्रतिवर्ष आधिकारिक तौर पर लुटा दिया जाना, उस गरीब के वोट और विश्वास के प्रति घोर अपराध है। जनता जो टैक्स विकास के लिए देती है, उस धन की ऐसी लूट एक आपराधिक षड्यन्त्र है, जिसे तुरन्त रोका जाना अत्यन्त आवश्यक है।

भारतीय जनमानस की उदासीनता ने राजनीति को ऐसा धन्धा बना दिया है, जिसमें बिना पूंजी लगाये, बिना किसी जवाबदेही, अयोग्य और धूर्त लोगों को अपार धन, सम्मान और अधिकार मिलते हैं। एक बार सांसद बन जाने वाला राजनेता 5 वर्षों में इतना धन, बाहुबल और इतना रसूख पैदा कर लेता है कि अपनी अकर्मण्यता और भ्रष्टाचार के बावजूद पुनः टिकट हासिल करता है, किसी पार्टी से टिकट नहीं मिले, तो अपनी अलग पार्टी बना जातीय समीकरण, धन और बाहुबल के सहारे पुनः जीत कर पहले से भी कई गुनी लूट मचाता है।

जनता इस सारे गोरखधन्धे को जान रही है, देख रही है, समझ रही है। अखबार, टी.वी. इनके कारनामों को दिन–रात उजागर कर रहे हैं। बुद्धिजीवी लेखक–पत्रकार, समाज सुधारक, सन्त महात्मा इनके कार्यों की भर्त्सना कर रहे हैं, ढीले–ढाले ही सही, कुछ कानून भी इस भ्रष्टाचार को रोकने के लिए विद्यमान हैं, परन्तु इन राजनेताओं में उसका कोई भय नहीं होता, क्योंकि वे जानते हैं कि उनके खिलाफ कोई कानूनी कार्यवाही नहीं होगी। लोकपाल विधेयक का इतने दिनों तक पारित नहीं हो पाना इसका प्रमाण है। कौन किसी के खिलाफ कार्यवाही करे? अपने खिलाफ सख्त कानून या संविधान में सुधार ये सांसद करने देते नहीं और वर्तमान में जो कार्यवाही करने के लिए जिम्मेदार लोग हैं, वे स्वयं भ्रष्ट हैं, वे दूसरों के खिलाफ कार्यवाही कर नहीं सकते, क्योंकि उनके अपने दामन दागदार हैं, उनके अपने निहित स्वार्थ हैं, उन्हें अपनी सरकार इन्हीं सांसदों के समर्थन से टिकाये रखनी है, चूँकि व्यवस्था कायम करने वाले स्वयं भ्रष्ट हैं, लोभ और स्वार्थ से परिचालित हैं, अतः इस वर्तमान व्यवस्था से किसी प्रकार के सुधार की उम्मीद करना व्यर्थ है। फिर समाधान कया हो सकता है? कैसे इस सारे परिदृश्य को बदला जा सकता है। वस्तुतः व्यवस्था में सार्थक बदलाव ही देश की इन सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था पर समग्रता से पुनर्विचार हो।

विचारणीय बिन्दु – भ्रष्टाचार सारी समस्याओं की जड़ है, कुछ ऐसी व्यवस्था बने कि सरपंच से लेकर प्रधानमंत्री तक वे ही लोग चुने जायें जो भ्रष्ट न हों, जिनके भ्रष्ट होने की सम्भावना न हो, जो बिना धन खर्च किये चुने जा सकें। आपराधिक पृष्ठभूमि वाले, घोटालों, रिश्वतखोरी, आर्थिक अनैतिकता, सन्दिग्ध चरित्र एवं सन्दिग्ध राष्ट्र निष्ठा वाले लोग चुनाव हेतु अयोग्य हों। भारतीय राजनीति शास्त्र के पाठ्यक्रमों का एक उच्च मानदण्डों वाला विश्वविद्यालय हो, जिसकी स्नातक डिग्री चुनाव में खड़े होने हेतु अनिवार्य हो। चुने गये प्रतिनिधि गुजारेलायक मानदेय, दो कमरों के फ्लैट और सामान्य श्रेणी की यात्रा सुविधा के अतिरिक्त सरकारी खजाने से अन्य किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखें। जो इस देश के गरीब व्यक्ति के समकक्ष जीवनयापन कर सकें, जैसे गांधी जी, मदनमोहन मालवीय, सरदार पटेल, लालबहादुर शास्त्री, राममनोहर लोहिया, दीनदयाल उपाध्याय आदि नेता करते थे। जो प्रतिवर्ष अपने और अपने परिवार की सम्पत्ति का ब्यौरा पूरी ईमानदारी से सार्वजनिक करें, जिनकी जाँच जनता में से चुने गये निःस्वार्थ, निष्पक्ष लोगों की वे समितियाँ करें, जिनके पास दोषी जनप्रतिनिधियों को हटाने और कड़ी सज़ा देने का कानूनी अधिकार हो, जो लोकायुक्तों की तरह नखदन्त विहीन अधिकारशून्य संस्था न हों। कानून में कुछ ऐसे प्रावधान किये जायें कि अपराधियों के बच निकलने की सम्भावनाएँ शून्य हों। सांसदों, मंत्रियों के विशेषाधिकार एवं वीआईपी सुविधाओं की परिपाटी को समाप्त किया जाये। दोषारोपित होने पर उनकी गिरफ्तारी भी अन्य लोगों की तरह ही हो। सुरक्षा के नाम पर आगे पीछे कई कमाण्डों एवं कारों के काफिले चलना अविलम्ब बन्द हों।

राष्ट्रपति, राज्यपाल, मन्त्रिमण्डल व उच्चाधिकारियों के पदों को सादगीपूर्ण, कम खर्चीला और आडम्बरमुक्त बनाया जाये। इनका रहन–सहन, प्रोटोकाल आदि राजाओं, वायसराय या रेजिडेण्ट की तरह न होकर इस देश की सामान्य जनता के मुख्य सेवक जैसा बनाया जाना चाहिए।

न्यूनतम मजदूरी और सर्वोच्च नौकरशाहों के वेतन और सुविधाओं में 1–4 से अधिक का अन्तर नहीं होना चाहिए और इस दूरी को पाटने के लिए वेतन बढ़ाने की नहीं, उच्च पदस्थ नौकरशाही के वेतन और सुविधाओं को कम किये जाने की आवश्यकता है, वस्तुतः राजनेताओं और नौकरशाही के गठजोड़ ने सरकारी नौकरियों और जनप्रतिनिधियों के वेतन और सुविधाएँ बेहिसाब बढ़ा ली हैं और प्रतिवर्ष बढ़ाते चले जा रहे हैं, जिससे देश की जनता के विभिन्न वर्गों के जीवन स्तर में भारी अन्तर आ गया है। एक तरफ प्रतिमाह बहुत बड़ी रकम और सुविधाएँ हैं और दूसरी तरफ अत्यन्त कम आय और बढ़ती हुई महँगाई है। ये दोनों ही भ्रष्टाचार के मूल कारक है।

बहुत कम परिश्रम के बावजूद सरकारी नौकरियों, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर, लेक्चरर, कर्मचारियों और अन्य सरकारी संस्थाओं के कर्मचारियों को अत्यधिक वेतन–सुविधाओं और पेंशन लुटाई जा रही है, जो कि गैरवाजिब और करदाता के धन की खुली लूट हैं। सांसद, विधायक जब–तब अपने वेतन भत्ते बढ़ाते हैं, तो कर्मचारी भी आये दिन वेतन बढ़ाने की माँग करते रहते हैं। वस्तुतः आजादी के पश्चात् राजनेताओं ने अपनी अयोग्यताओं को छिपाने तथा अपने लिए अधिकाधिक अधिकार, वेतन भत्ते, सुविधाएँ जुटाने के लिए उच्च नौकरशाहों तथा कर्मचारी वर्ग को भी खुश रखने तथा निम्नवर्ग ग्रामीण जनता को बिना परिश्रम किये कुछ न कुछ देते रहने की युक्ति अपना ली है, जिससे जनता में कर्त्तव्यों के प्रति उदासीनता बढ़ी है। बिना परिश्रम किये मजदूरी एवं मुफ्त सहायता प्राप्त करने की प्रवृत्ति सर्वत्र दिखाई पड़ती है। आजादी के इतने वर्षों बाद स्थिति यह है कि कर्मचारियों में कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठा और श्रमिक वर्ग में श्रम के प्रति निष्ठा चिराग लेकर ढूंढने पर भी नहीं मिलती।

जनता के धन की इस खुली लूट को रोकने के लिए जनता को ही आगे आना होगा। जनता की सेवा के वादे के साथ राजनीति में आने वाले जनप्रतिनिधियों तथा जनता की सेवा के लिए नौकरी पाने वाले नौकरशाहों को इतने अधिक वेतन, भत्ते सुविधाएँ, राजसी रहन–सहन क्यों? करदाताओं को अधिकार हो कि वह सरकार से पूछे कि उसके टैक्स का पैसा किसे और कितना दिया जा रहा है। किसे कितना वेतन, भत्ते और क्या सुविधाएँ दी जानी चाहिए, यह जनता और करदाता तय करे, न कि विधायकों, सांसदों और अफसरशाही का गठजोड़। जो एक बार सांसद या विधायक रह गया, उसे आजीवन पेंशन, दो बार रहने वाले को दुगुनी, चार बार रहने वाले को चौगुनी पेंशन आजीवन, "जनता धन की लूट है, जितना लूट सके वो लूट।" हाँ ऐसे जनप्रतिनिधियों के लिए *अवश्य कोई समुचित व्यवस्था होनी चाहिए, जिसने कोई* पेट्रोल पम्प, गेस एजेन्सी, खान आवंटन, जमीन आवंटन या ऐसी ही कोई स्थाई आय का स्रोत अपने जनप्रतिनिधि होने के प्रभाव से न बनाया हो जैसा लालबहादुर शास्त्री ने उदाहरण रखा, मृत्यु के पश्चात् सरकारी बंगला खालीकर कहीं जाने के लिए उनके परिवार के पास कोई मकान नहीं था। आज तो जनप्रतिनिधियों का नैतिक स्तर इस कदर गिर गया है कि पार्षद्, पंच, सरपंच, विधायक, सांसद सभी निर्वाचन के तुरन्त बाद अपने लिए उपर्युक्त सभी वर्ग आवंटन करवाने में जुट जाते हैं, पार्षदों, विधायकों, सांसदों, उच्च नौकरशाहों को प्रदान की जाने वाली प्राथमिकताएँ, वीआईपी सुविधाएँ समाप्त की जानी आवश्यक है।

अकूत दौलत और पद के दुरुपयोग के लिए ही राजनीति में जाने की जो आम मानसिकता नेताओं और जन सामान्य में बैठ गई है, उसे बदलकर निःस्वार्थ सेवा के लिए राजनीति में जाना, अपना सब कुछ समर्पित कर देशसेवा एवं भारत को पुनः विश्वगुरु, विश्व शक्ति बनाने के लिए राजनीति में जाने का जो श्रेष्ठभाव स्वतन्त्रता से पहले और कुछ वर्षों बाद तक हमारे राजनेताओं में था, उसी की पुनर्स्थापना के लिए आदर्श उपस्थित कर सकने वाले श्रेष्ठ व्यक्तियों को आगे लाने और भ्रष्ट लोगों को हटाकर लोकतन्त्र को सही स्वरूप में स्थापित और दृढ़संकल्प हो आगे आना होगा, तभी देश में सुशासन स्थापित हो सकेगा।

– बोहरा गणेश मार्ग,
उदयपुर–313002 (राज.)

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर का स्वर्ण जयन्ती समारोह

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर–7 का स्वर्णजयन्ती समारोह (50वां वार्षिकोत्सव) 15 मई से 19 मई, 2019 तक सोल्लास मनाया जायेगा। जिसमें दिनांक 15 मई, 2019 दिन बुधवार को अपरान्ह 3 बजे से 6 बजे एक भव्य शोभायात्रा (नगर कीर्तन) का आयोजन है। इस पुण्य अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान उपदेशक स्वामी विदेह योगी (कुरुक्षेत्र), आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी (बिजनौर), आचार्य राम प्रसाद जी (कानुपर देहात), भजनोपदेशिका कु. अंजली आर्या (हरियाणा), भजनोपदेशक श्री राम सेवक आर्य (हमीरपुर), तबला वादक श्रवण कुमार (पतारा, कानपुर) तथा अन्य अनेक विद्वान्, उपदेशक, संन्यासी पधार रहे हैं। इस अवसर पर अनेकों अन्य सम्मेलन तथा कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाये। ऋषि के सन्देशों को जन–जन तक पहुंचाने के लिए अपना आर्थिक सहयोग प्रदान कर सहयोग प्रदान करें।

– मंत्री, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर

आर्य समाज मयूर विहार, फेस-2, दिल्ली के तत्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस का भव्य कार्यक्रम सम्पन्न

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज मयूर विहार, फेस-2, दिल्ली-91 के तत्वावधान में गत् 14 अप्रैल, 2019 को आर्य समाज स्थापना दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। इस अवसर पर किये गये विशेष यज्ञ के ब्रह्मा के पद को आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी ने सुशोभित किया। उनके अतिरिक्त युवा आर्य भजनोपदेशक श्री भीष्म आर्य के जोशीले भजनों से श्रोता मन्त्रमुग्ध हो गये। आर्य समाज लाजपत नगर से सीधे आर्य समाज मयूर विहार पहुंचकर स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग सवा घंटे का ओजस्वी उद्बोधन देकर उनकी प्रतीक्षा में उपस्थित श्रोताओं को अत्यन्त प्रभावित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों पर प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि 19वीं शताब्दी में भारत की इस भूमि पर महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ और उन्होंने *महाभारत के पश्चात् पुनः वेदों को समाज के समक्ष* उपस्थित किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी महाराज को गुरुदक्षिणा के रूप में अपना सम्पूर्ण जीवन वेद के प्रचार-प्रसार के लिए सौंपकर जब कार्य करना शुरू किया था तो अनेक ऐसे अवसर आये जब उन्हें बड़े-बड़े प्रलोभन देकर वेद मार्ग से विमुख करने के प्रयत्न किये गये। किन्तु महर्षि दयानन्द वेद की मान्यताओं को प्रचारित-प्रसारित करने के लिए चट्टान की तरह अडिग रहे। उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह द्वारा एकलिंग की गद्दी का मंहन्त बनने का प्रस्ताव महर्षि दयानन्द ने स्वीकार नहीं किया और इसी प्रकार ब्रह्मसमाज तथा प्रार्थना समाज के प्रस्ताव भी उन्होंने ठुकरा दिये, क्योंकि इन प्रस्तावों में महर्षि को वैदिक सिद्धान्तों से हटाने का प्रस्ताव शामिल था, वेद को अपौरुषेय न मानो, ईश्वर की प्रतिमा बनाने का खण्डन न करो आदि। इसी प्रकार जब-जब भी महर्षि दयानन्द के समक्ष वेद विरुद्ध मान्यताओं को स्वीकार करने के प्रलोभन आये उन्होंने एक क्षण में उन्हें ठुकरा कर वेदों के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया।

वेदों की प्रासंगिकता एवं वेदों की सार्वभौमिकता पर प्रकाश डालते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने संसार के समस्त मत, सम्प्रदायों को चुनौती देते हुए कहा कि वे बतायें कि 3700 वर्ष पूर्व वर्तमान में प्रचलित सभी मजहब एवं सम्प्रदायों में 'पारसी मत' बना था उससे पूर्व पूरी दुनिया में वैदिक धर्म के अतिरिक्त और कौन सा मत, सम्प्रदाय अथवा मजहब था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि 3700 वर्ष के पूर्व वर्तमान सम्प्रदायों में से कोई भी सम्प्रदाय उपस्थित नहीं था। इन सबका जन्म पिछले लगभग 3700 वर्षों के अन्तराल में हुआ है। अतः वर्तमान में समय सम्पूर्ण ज्ञान-विज्ञान एवं मानव की उन्नति का स्रोत वेद ज्ञान है। वेद में किसी भी प्रकार की संकीर्णता, भूगोल, इतिहास एवं समय, काल विशेष या देश-विदेश की चर्चा नहीं है। वेद समस्त मानवमात्र के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा द्वारा दिया गया वह ज्ञान है जिसमें किसी भी प्रकार की घृणा, नफरत, द्वेष, भेदभाव एवं पक्षपात नहीं है।

उन्होंने कहा कि ऐसे वेद ज्ञान के द्वारा ही विश्व में शांति एवं सौहार्द स्थापित किया जा सकता है। शांति एवं सुख की तलाश में भटक रही मानवता को वेद की शरण में आकर ही यह प्राप्त हो सकते हैं। स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यान को श्रोताओं ने एकाग्रचित होकर, सचेत होकर सुना और उन्हें पुनः अपना समय देने का आग्रह किया। स्वामी जी का इस कार्यक्रम में सम्मिलित होने के पीछे आर्य समाज के कर्मठ एवं विद्वान् मंत्री श्री ओम प्रकाश पाण्डेय एवं स्वामी जी के विशेष सहयोगी एवं साथी श्री वेद भल्ला का विशेष आग्रह ही मुख्य आधार बना। समाज के सभी पदाधिकारियों ने स्वामी आर्यवेश जी का माल्यार्पण द्वारा जोरदार स्वागत किया और उनके प्रति अत्यन्त कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम की व्यवस्था में अपना विशेष योगदान देने वाले महानुभावों में सर्वश्री हरवंशलाल शर्मा प्रधान, डॉ. राजेन्द्र नायक उपप्रधान, श्री एल.सी. गुप्ता कोषाध्यक्ष, श्री ओम प्रकाश पाण्डेय मंत्री, श्रीमती मधु सैनी प्रधाना महिला समाज, श्रीमती ऊषा गुप्ता उपप्रधाना, श्रीमती संतोष चावला उपप्रधाना, श्रीमती सुनीता गुप्ता मंत्राणी, श्रीमती श्रुति सूद कोषाध्यक्षा महिला समाज, श्री रामदेव चोपड़ा संरक्षक, श्रीमती विजयलक्ष्मी नरूला संरक्षिका, श्रीमती कमला मोहन संरक्षिका, श्रीमती संतोष भारती संरक्षिका आदि महिला समाज के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम में सर्वश्री वेद भल्ला, श्रीमती सुधा शर्मा, श्री यशोवीर आर्य, पार्षद श्री नकुल भारद्वाज, पार्षद श्रीमती भावना मलिक आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री भीष्म जी आर्य के ओजस्वी भजनों का भी श्रोताओं ने विशेष आनन्द लिया। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की भी सुन्दर व्यवस्था की गई थी। स्वामी आर्यवेश जी ने सभी पदाधिकारियों विशेष रूप से श्री ओम प्रकाश पाण्डेय एवं श्री वेद भल्ला जी का मंच से विशेष आभार व्यक्त कर प्रस्थान किया।

श्री गायत्री योग कप द्वारा योगासन प्रतियोगिता का शानदार आयोजन

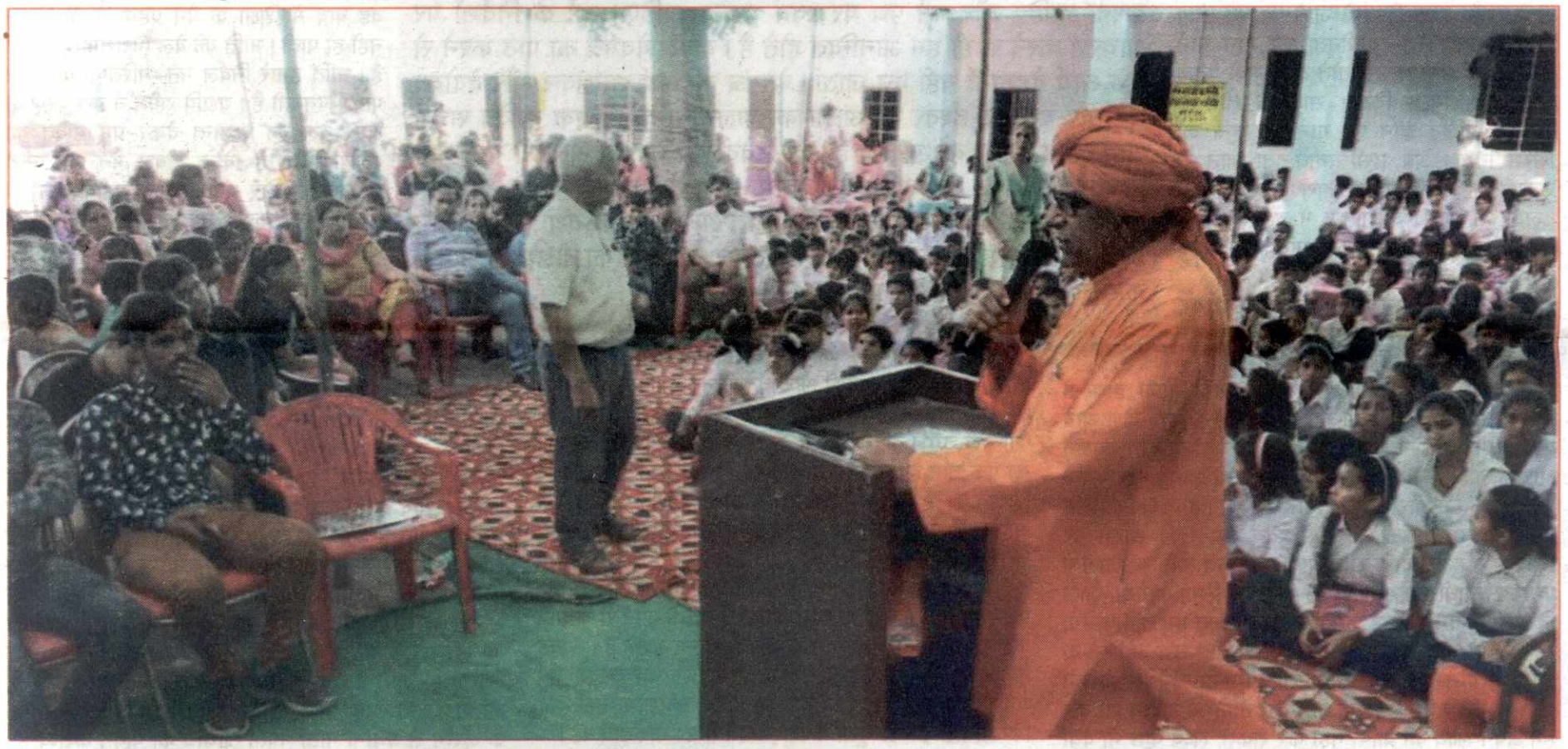

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने पारितोषिक वितरण एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं को किया सम्मानित

दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ ने मंच संचालन तथा युवा योगाचार्य प्रवीण आर्य ने किया प्रतियोगिता का संयोजन

गत 14 अप्रैल, 2019 को दोपहर 1 बजे से सायं 6 बजे तक दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत, हरियाणा में श्री गायत्री योग कप के तत्वावधान में योगासन प्रतियोगिता का शानदार आयोजन किया गया। यह आयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में किया गया था जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। प्रतियोगिता का संयोजन तथा मंच का कुशल संचालन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री प्रिं. आजाद सिंह बांगड़ ने किया।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य महानुभावों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। योग की विभिन्न स्थानों से आई टीमों ने अपनी शानदार प्रस्तुति देकर दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर दिया। परिषद् की ओर से स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यरत्न की उपाधि से जिन महानुभावों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया उनमें सर्वश्री प्रिं. आजाद सिंह बांगड़, प्रो. जय प्रकाश आर्य, प्रिं.. ओ.पी. गर्ग, श्री धर्मप्रकाश दहिया, मा. भगवान सिंह, श्री मनजीत सिंह दहिया, श्री विश्वबन्धु शास्त्री, श्री राजेन्द्र सिंह चहल, पदम्श्री कवंल सिंह चौहान, श्री बलराम आर्य, मा. फतेह सिंह आर्य, श्री नरेश गौतम, श्री इन्दर सिंह आर्य, श्री रमेश आर्य, श्री अमित आर्य, योगाचार्य श्री प्रवीण आर्य, श्री अंकित आर्य, श्री उत्तमदेव आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के समस्त छात्र एवं छात्राओं को पारितोषिक स्वरूप नोटबुक भेंट की तथा प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं मे विशेष स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में स्वामी जी ने सभी उपस्थित प्रतिभागियों एवं अन्य श्रोताओं और दर्शकों को प्रेरित करते हुए कहा कि वे योग को अपने जीवन में अपनायें। सात्विक

भोजन, नियमित दिनचर्या एवं सात्विक विचार अपनाने वाला व्यक्ति जीवन में कभी भी निराश नहीं हो सकता। योग जीवन की दैनन्दिन दिनचर्या का आवश्यक अंग बना लेना चाहिए जैसे प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन भोजन, नींद एवं अन्य कार्य आवश्यक रूप से करता है उसी प्रकार से योग भी हमारे लिए उतना ही उपयोगी है। इस प्रतियोगिता के माध्यम से युवाओं को नैतिकता, ईमानदारी एवं आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़ने के लिए विशेष रूप से प्रेरित किया गया। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली एवं व्यवस्थित था और बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ।

भ्रान्तियों का भार न ढोइये

– ब्रिगेडियर चितरंजन सावन्त, बी.एस.एम.

धर्मग्रंथ घर में रखकर, केवल उसकी पूजा करने से या आरती उतारने से जीवन मंगलमय होता है – यह विचार भ्रांतिमूलक है। धर्म ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए और धर्म पथ पर स्वयं चलना चाहिए। धर्म के निर्देशों पर आचरण करने से ही हम आनन्दित होते हैं। केवल वेदमंत्र का पाठ करने से एक आर्य वेदमार्गी नहीं बन जाता। वेदमंत्र का अर्थ समझकर और वेदोक्त मार्ग पर चलकर, ईश्वर की आज्ञा का पालन करके ही एक व्यक्ति सच्चा आर्य (श्रेष्ठ पुरुष) बन सकता है। चारों वेदों को घर की अल्मारी में सजाने मात्र से ही जीवन आनन्दमय हो जायेगा – यह केवल एक भ्रांति है। भ्रांति दुःख का मूल है, सुख का नहीं। यही बात अन्य धर्मों के ग्रंथों पर भी लागू होती है। मनुष्य होकर पशु के समान पीठ पर धर्म ग्रन्थ का बोझ ढोने से क्या कोई लाभ होगा? कभी भी नहीं।

एक साधु ने एक बहेलिये से, उसके द्वारा जंगल में पकड़ा गया एक तोता इसलिए खरीद लिया ताकि वह तोता पिंजरे का पक्षी न बन जाये। साधु द्वारा सिखाये जाने पर वह तोता एक चेतावनी भरा स्वाधीनता का गान गाने लगा। फिर साधु ने उस तोते को उसके पैतृक परिवार से मिला दिया। साधु के तोते ने अपनत्व अर्जित ज्ञान एवं गान पूरे कुन्बे को सिखा दिया। अब उसी स्वाधीनता ज्ञान से उदय होता था भोर का तारा और उसी से ढलती थी शाम। कालान्तर में वही बहेलिया उसी जंगल में उसी उद्देश्य से आया। सभी तोते एक साथ एक ही गीत गा रहे थे –

बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाने डालेगा, हमें फंसायेगा, किन्तु हम नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे।

बदली हुई परिस्थिति में, अपनी रोटी–रोजी हाथ से निकलते देखकर बहेलिया गश खाकर गिर पड़ा। होश आने पर, उसने सोचा कि जब जंगल तक आये हैं तो दाना डालने और जाल बिछाने की खानापुरी कर ही दी जाये। ऐसा करके पेड़ की छांव में और शीतल समीर में वह सो ही गया। बहेलिये की जब आंख खुली तो उसे स्वयं अपनी ही आंखों पर विश्वास न हुआ। दाना खाने आये अनगिनत तोते अब जाल में फंसकर स्वाधीनता गान गा रहे थे – 'बहेलिया आयेगा, जाल बिछायेगा, दाने डालेगा, हमें फंसायेगा, किन्तु हम नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे, नहीं फंसेंगे।' फिर भी सभी तोते उस बहेलिये के जाल में फंसे हुए थे। स्वाधीनता गान गा लेने से ही हम स्वाधीन बने रहेंगे, यह एक भ्रांति हैं। भ्रांतिमय जीवन जी कर हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकते, लक्ष्य कुछ भी क्यों न हो। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हम भारतवासियों ने 'वन्देमातरम्' गाया, साथ–साथ पुरुषार्थ से स्वतंत्रता अर्जित की। गान एवं पुरुषार्थ साथ–साथ चलें और हम गंतव्य तक पहुंच गये। विश्व ने हमारी मंगल कामना की। किन्तु हम अपनी ही रची भ्रांति में कहने लगे कि 'वन्देमारतम्' सेक्युलर नहीं है – उसे 15 अगस्त, 1947 से आज तक कभी ध्वजारोहण के समय गा न सके, बजा न सके। सेक्युलर रूप भ्रांति के भूलैया में भटकते रहे। मनीषी मानव होकर भी रट्टू तोते समान अर्जित ज्ञान को आचरण में ढाल न सके।

नवीन वेदान्तियों समान भ्रांति द्रष्टा अपनी संख्या और शिष्य संख्या बरसाती मेंढकों की तरह बढ़ाते जा रहे हैं। भ्रांति द्रष्टा भ्रांति मूलक विचारों का सहारा लेकर भोले–भाले नर–नारी को ठगते रहते हैं। भोली जनता का पैसा मारना आज एक पनपता व्यवसाय बन गया है। 'पोपलीला' यानी 'राम राम जपना, पराया माल अपना', छद्मी ब्राह्मणों की जीवन *लीला हो गई है। कुछ तथाकथित धर्म प्रमुख, वेदवाणी* जन–जन तक नहीं जाने देते हैं क्योंकि उन्हें डर है कि वेद मार्ग पर चलने वाले भ्रांतियों से भ्रमित न होंगे और मक्कार पुरोहितों का बटुआ न भरेंगे। स्त्रियों से वेद पढ़ने का अधिकार छीनना एक बड़ी साजिश थी। पूरे हिन्दू समाज के विरुद्ध। इस हिन्दू हित हनन के षड्यन्त्र में शामिल थे पोंगा–पंथी बम्मन (उन्हें ब्राह्मण न कहिये) जो स्वयं निरक्षर थे और पूरे स्त्री समाज को वेद विहीन बनाना चाहते थे ताकि सदैव ही अपना उल्लू सीधा करते रहें। स्त्रियाँ ही 'माता' हैं, और सभी बच्चों के लिए माता ही प्रथम विद्यालय है। जब माता वेद विहीन है, अशिक्षित है तो उस माता रूपी विद्यालय में शिक्षा का अंकुर कैसे निकलेगा, कैसे पनपेगा? वेदमाता (स्तुता मया वरदा वेदमाता), (अथर्ववेद) और बच्चों की माता के बीच पोंगा पंथी पंडितों ने एक अभेद्य दीवार खड़ी कर दी और कहा **'स्त्रीशूद्रौ नाधीयातामिति श्रुतेः'** – स्त्री और शूद्र न पढ़ें, यह श्रुति है – जबकि ऐसा कहीं किसी आर्षग्रंथ में नहीं लिखा है। कपोल कल्पित श्रुति के आधार पर अवैध आय का मार्ग मिला।

एक भ्रांति लोकप्रिय की गई – शनि देवता पर यदि रुपये शनिवार को नहीं चढ़ाये गये तो घोर अनिष्ट होगा। शनिदेव को धन से संतुष्ट किये बिना शनिवार को कोई नया काम न शुरू करना अन्यथा कार्य में विघ्न तो पड़ेगा ही कार्य शुरू करने वाला भी परमात्मा को प्यारा हो सकता है। फिर क्या होता है? पोंगा पंथी विशेष यज्ञ का मिथ्या आयोजन करते हैं और शनिदेव पर चढ़ाया गया चढ़ावा चट कर जाते हैं लम्बोदर पुजारी। आज भी प्रत्येक शनिवार, हर चौराहे पर टीन के डिब्बे मे काली वीभत्स आकृति को शनिदेव का नाम देकर, लाल बत्ती पर रूके कार चालकों से पैसा एंठने वालों की कमी नहीं है। स्वदेशी और विदेशी नर–नारियों के सामने धर्म का अपमान करते हैं और देश का अपमान करते हैं ये 'शनि के ठग'। वैदिक धर्म में, शनैश्चर तो परमपिता परमात्मा का एक नाम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती 'सत्यार्थ प्रकाश' में लिखते हैं – **'यः शनैश्चरति स शनैश्चरः**: – जो सबसे सहज में प्राप्त धैर्यवान है, इससे उस परमेश्वरका नाम शनैश्चर है।'

अतः शनैश्चर धैर्यवान परमात्मा का नाम है और दयालु परमात्मा चढ़ावा नहीं चाहता, चढ़ावा न चढ़ाये जाने से कदापि क्रोधित नहीं होता। शनिवार को कार्य आरम्भ अशुभ है। – यह एक भ्रांति है। शनिदेव एक कुपित होने वाले 'नाशक देव' हैं। यह भी एक भ्रांति है। शिक्षित नर–नारियों को शोभा नहीं देता कि ढोंगियों की पेट पूजा के लिए भ्रांतियों का भार ढोते रहे।

धर्मग्रंथ घर में रखकर, केवल उसकी पूजा करने से या आरती उतारने से जीवन मंगलमय होता है – यह विचार भ्रांतिमूलक है। धर्म ग्रन्थ का अध्ययन करना चाहिए और धर्म पथ पर स्वयं चलना चाहिए। धर्म के निर्देशों पर आचरण करने से ही हम आनन्दित होते हैं। केवल वेदमंत्र का पाठ करने से एक आर्य वेदमार्गी नहीं बन जाता। वेदमंत्र का अर्थ समझकर और वेदोक्त मार्ग पर चलकर, ईश्वर की आज्ञा का पालन करके ही एक व्यक्ति सच्चा आर्य (श्रेष्ठ पुरुष) बन सकता है। चारों वेदों को घर की अल्मारी में सजाने मात्र से ही जीवन आनन्दमय हो जायेगा – यह केवल एक भ्रांति है। भ्रांति दुःख का मूल है, सुख का नहीं। यही बात अन्य धर्मों के ग्रंथों पर भी लागू होती है। मनुष्य होकर पशु के समान पीठ पर धर्म ग्रन्थ का बोझ ढोने से क्या कोई लाभ होगा? कभी भी नहीं। गधा एक सहनशील बोझढोने वाला जीव है। उसकी पीठ पर पत्थर का बोझ हो या हो शास्त्रों का, गधे के लिए तो दोनों ही केवल बोझ हैं।किन्तु हम मनुष्यों को शास्त्रों का बोझ नहीं ढोना है, शास्त्रों के अनुसार ही जीवन जीना है। शास्त्र, जो ऋषि प्रणीत हैं, हमें सत्य पथ दिखलाते हैं, जहां जीवन में प्रकाश होता है जो हमें भ्रांतियों की अंधेरी गलियों में खो जाने से बचाता है।

अविद्या जननी है भ्रांति की। अविद्या अन्धकार हैं पिछली कई शताब्दियों से स्त्रियों को शिक्षा के अधिकार से वंचित रखकर भारतीय समाज ने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली। देश की जनसंख्या का आधा भाग अविद्या के अंधकार में चला गया। अशिक्षित व्यक्ति में भ्रांतिमूलक विचार पनपते हैं। जब माताएं भ्रांति ग्रस्त हो जाती हैं तो बच्चों के कोमल मन को भ्रांति ग्रसित होने में विलम्ब कहां। बचपन में जो भ्रांति भीतर घुस जाती है, वह बाद में शिक्षा के पैने प्रहार से भी निर्मूल नहीं हो पाती। भ्रांति की बेल (पैरासाइट) समान है। भ्रांति हमारे निर्बल मन–मस्तिष्क को उर्वर पाकर पनपती है। यद्यपि रहीम ने इस परजीवी अमर बेल का दृष्टान्त देकर प्रभू भक्ति को बढ़ावा दिया है किन्तु सबल मन और ऊँचे मनोबल के लिए भ्रांति रूपी परजीवी बेल को छिन्न–भिन्न करके नष्ट करना अनिवार्य है। अमर बेल बिन मूल के प्रभु पालत है ताहि, रहिमन ऐसे प्रभुहिं तज खोजत फिरिये काहि – इस दोहे में दिलचस्पी लेने वाला व्यक्ति स्वयं परजीवी (पैरासाइट) बनकर निस्तेज हो जायेगा, भ्रांतियों का शिकार होकर सदैव जीवन मृत्यु के झूले में झूलता रहेगा। एक अर्ध जीवित शव समान। अतः इस दुर्दशा के मूल में स्थित उस कुत्सित अविद्या का नाश हम सत्य विद्या की वृद्धि द्वारा करेंगे।

भूत–प्रेत, जिन, पिशाच आदि को भटकती आत्मायें समझना यदि भ्रांतिमूलक विचार नहीं तो और क्या है। जो बीत गया वह भूत है और भूत कभी भी वर्तमान पर हावी नहीं हो सकता। एक शरीर छोड़ने के बाद आत्मा नये शरीर में प्रवेश करती है, अतः भटकती आत्मा भ्रान्ति है। बच्चों को शम जदी सुलाने के लिये विवेकहीन मातायें अक्सर भटकती आत्माओं का डर उनके मन में बैठा देती हैं। बच्चे जब किशोर और वयस्क हो जाते हैं तब भी भटकती आत्मा, जो मात्र भ्रांति है, का बोझ ढोते रहते हैं। अपने बच्चों को भ्रांति से भरे मस्तिष्क के कुसंग से बचाना माता–पिता आचार्य का पावन कर्त्तव्य है। 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषों वेद' – जब माता–पिता और आचार्य, तीनों ही अच्छे शिक्षक हों तो व्यक्ति ज्ञानवान होता है। एक ज्ञानी व्यक्ति भ्रांति की भर्त्सना करता है, उसको कदापि प्रश्रय नहीं देता।

कभी–कभी शिक्षित और प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए या लोभवश भ्रांतियों को प्रश्रय देते हैं उनसे हमें दूर रहना चाहिए। भारत में थ्योसाफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल हेनरी अल्काट और उनकी सहयोगी मैडम बैलेवेट्स्की भूत के अस्तित्व में आस्था रखते थे। सभ्य समाज में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए उन्होंने शिमला में एक भूत की फोटो खींचने का दावा किया। अन्य छायाकारों ने इसे झूठा पाया, भूत की फोटो सिर्फ ट्रिक फोटोग्राफी थी। भूत के वकील की ढोल में पोल थी।

भ्रांति जननी है अंधविश्वास की। साधारण मनुष्य पहले सत्य का सहारा ढूंढता है ताकि अपना और स्वजन का आत्मविश्वास जगा सके। आत्म विश्वास से ऊँचा होता है *मनोबल। आत्म विश्वास और मनोबल से मनुष्य समस्याओं का* समाधान ढूंढ़ने में सफल होता है। अतः सत्य विद्या और सत्य विद्या का आदि मूल परमेश्वर ही आधार है। आनन्दमय जीवन के अनेक अंधविश्वास, जैसे कब्र पूजा, ताबीज बांधना, बिल्ली द्वारा रास्ता काट जने को विघ्न मानना, ये सब निर्बल मन की उपज है। सच्ची वास्तविकता पर आधारित आनन्दमय जीवन में कभी न होगा भ्रांतियों का भार।

– 909, सैक्टर–29, नोएडा (उ. प्र.)

शोक समाचार

अत्यधिक दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि श्री राजेन्द्र मुनि (पूर्व नाम गजराज सिंह) निवासी ग्राम–मोहाना, पो.–मोहाना, जिला–बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश का निधन दिनांक 24 मार्च, 2019 को हो गया। उन्होंने 73 वर्ष की आयु को सुख पूर्वक भोगा। निधन के समय भी वह स्वस्थ और सुखी थे। गोहाना से चल कर फरीदाबाद महर्षि योगधाम को आ रहे थे कि अचानक योगधाम के निकट ही प्रातः 10 बजे निधन हो गया।

इन्होंने गृहस्थ जीवन को पुलिस सेवा में रहते हुए व्यतीत किया तदोपरान्त स्वामी दिव्यानन्द जी के सम्पर्क में आकर यौगिक क्रियाओं को सीखा और सिखाया। वर्ष 2010 में 12 अप्रैल को स्वामी दिव्यानन्द जी से वानप्रस्थ लेकर वैदिक विरक्त मण्डल से जुड़ गये और योगधाम फरीदाबाद में 15–15 दिन के योग शिविर लगाये। 10 मार्च, 2019 को राजधर्म पत्रिका और सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के स्वर्ण जयन्ती समारोह में उपस्थित होकर योगदान दिया। मुनि जी अपने पीछे पुत्र धर्मेन्द्र, पुत्रवधु और पौत्री छोड़ गये हैं। मुनि जी के जाने से विरक्त मण्डल को भारी क्षति हुई है। उनकी शोक सभा दिनांक 30 मार्च, 2019 को महर्षि दयानन्द योगधाम, फरीदाबाद में हुई जिसमें स्वामी सोम्यानन्द के अतिरिक्त फरीदाबाद की सभी आर्य समाजों के व्यक्तियों ने भाग लेकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये और उनकी जीवात्मा को सद्गति प्राप्त होने की परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की।

– राम खिलावन (स्टेशन मास्टर, फरीदाबाद), मंत्री महर्षि योगधाम

आवश्यकताऽऽविष्काराणां जननी भवति

– डॉ. केशव प्रसाद उपाध्याय, प्रधानाचार्य गुरुकुलमहाविद्यालयः ज्वालापुरम्, हरिद्वारम् (उत्तराखण्ड)

यानि वस्तूनि स्वप्नेऽपि नानुभूतानि, येषां स्वरूपस्य कल्पनाऽपि मानसं नावगाहते स्म। यदि प्रकृत्या तेषामावश्यकता कस्यापि कृते प्रसूयते, तानि वस्तूनि निर्मातुं स प्रवर्तते। अयमेवार्थो विवेच्यतया शीर्ष स्थाने लिखितस्यास्य प्रबन्ध विषयस्य।

यदि वयं पुरातन युगेतिहासेषु दृष्टिं क्षिपामः, यदा सभ्यता प्रारम्भोऽपि नासीत्, आविष्काराणाम् आवश्यकतामेव प्रसूता इदं स्पष्टमवगच्छाम। तस्मिन् समये मनुष्याः पशुवत् वर्त्तन्तेस्म, पत्रेषु भुज्जतेस्म, वस्त्राणामुपयोगं नाज्ञासिषुः, वृक्ष शाखासु कुशकासादि सङ्कलायां वा धरायां अशयिषत् ते अस्त्राणामुपयोगे वह्नि कार्यं च नाविदन्। परमयं समयोऽपगतः क्रमशस्त एव मानवाः सीतातपवात्याभ्यः स्वं गोपायितुं गृहस्यावश्यकताम् अनुभवितुमारभन्त। ततश्च गृहनिर्माणप्रक्रिया मुदभावयन्, एवं वस्त्राणां स्थाने पशूनां चर्माणि समुपायुज्यत।

यदा च मनुष्याः परेभ्यः स्वस्य रक्षाया आवश्यकता मनसि विविदुः। भोजनार्थं पशूनां मांसं चापेक्षितवन्तस्तदनन्तरं प्रस्तर खण्डानि तेष्वेव संघृष्य नाना विधानि शस्त्राण्यस्त्राणि च निरमायिषु र्यैर्भेदनच्छेदनादि कार्यं सुकरं समपद्यत। कतिचित् सराणि चामयासमश्नतां तेषां जाते मुख वैरस्ये ते पाक–क्रियाया आवश्यकतां निरधारयन्, यतस्ते पाक प्रक्रियामनुसमधिषत।

उपर्युक्ताद् विवरणादिदमवधार्यते, किमपि वस्तु बलादिवाविष्कारयति। एवं हि वस्तुस्थितः कोऽपि किमपि वस्तुं विना कस्याश्चित् कठिनायां स्थितौ पतति, न चोपलभते प्रतिकारपथम् विमानायते च तदनुपलब्ध्या, ततः कंचनोपायं तत्प्रतीकारस्य सर्वात्मना चिन्तयति लभते च तदुपायां एवाविष्कार स्वरूपतया परिणमन्ते।

यदि मनुष्यः कश्चित् सर्वमपि मनोभिलषितं वस्तु सद्य एवाधिगच्छेत्, न प्रतिबद्धमनोरथतया खिद्येत। किमर्थं स व्याप्रियेत चेतसि, कुतश्च निर्गच्छेयुर्नवा पदार्थाः। परमत्र प्रतिक्षणं नूतनतामर्थयमाने जगति केवलं भोजनेनाच्छादनेनैव च मानवस्य तृष्णा नोपशाम्यति। स किमप्यन्यदपि कामयते, तदर्थमपि तस्य बुद्धिर्व्याप्रियते, ततोऽपि च बहव आविष्कारा जन्म लभन्ते।

अत्र जगति बहव ईदृशा अपि सन्ति पदार्थाः येषामाविष्कारा नावश्यकतापारवश्यकृतः, यथा वाष्पशक्तिविद्युदादिकाः पदार्थाः, तानन्तरापि मनुष्यां जीवनं न प्रत्यवध्यत। एवं च आविष्कारा आवश्यकताभिरेव जन्यन्त इति रिक्तवचः इति श्रुवतः प्रतिवक्तव्यं यतः मानवानामावश्यकता न केवलं कायिक्य एव भवन्ति, ते मानसिक भोजनं लब्धुं प्रयतन्ते। जातेऽपि जीवन धारणोपाये मानसिकं तद् भोजनं च तदीयाविरतबुद्धिव्यापार प्रभावेण समुपहिनयते, व्याप्रियन्ते, तदाऽऽविष्कारा जन्म गृहणन्ति, शब्द प्रसारणयन्त्रम्, वायुयानम्, तडित्पत्रम् इत्यादय एवं प्रकारा एव।

एवं हि श्रूयते कुत्रापि पर्वत शिखरे समासीनः एकः काकः पिपासा क्षामकण्ठो भूमौ विवरे जलमपश्यत्, पर्वत शिखराश्च भुवमवतार परं भुवि समवतीर्णस्यातिस्य विवरस्थं जलं पातुं शक्तिर्नाभवत्। पिपासया पीडितश्च स इतस्ततः पश्यन्नपि किमपि वर्त्म नाद्राक्षीत्। जलं विना शुष्यदाननविवरस्य तस्य मनस्येक उपायः स्फुरति स्म। तत्र वर्तमानानि लघूनि प्रस्तर खण्डानि चंचुपुटेनादाय विले क्षप्तुमारभत, तेन विले भृते तत्रत्यं जलं बहिरभवत्। स काकः स्वां पिपासां शमितवान्।

दृश्यतामत्र कथायामाविष्कारः कथमावश्यकता बाधितेन काकेन व्यधीयत। यदि पक्षिषु एतादृशी स्थितिः, का कथा पुरुषाणाम्? 'थोमस एडिसन' महोदयः कियतांशेन बधिरोऽतः शब्दव्यापारान्वेषणप्रवृत्तश्चासीत्। अनुसंधान प्रवृत्तेनैव तेन 'फोनोग्राफ' नामकं यन्त्रमाविष्कृतं यद्धुना प्रतिपल्लब्धसंचारम् अस्माकमेव देशस्यालङ्कारः श्रीमान् इन्दुमाधवमलिक महोदयः स्वयं प्रवाहिकया पीड़ित आसीत्, स सुपचं भोजनं पक्तुं प्रकारमनुसन्दधान एकं यन्त्रमाविष्कृतवान् यद्धुना जनाः 'कुकर' इति नाम्ना व्यवहरन्ति।

एतावता समर्थितं साधु तथ्यमिदं यद् यदा कापि परमावश्यता पुमांसं व्याकुलयति, तदा तदीया मतिर्न विश्राममधिगच्छति। अविश्रान्तं व्याप्रियमाणा च समतिः सुप्तां स्वां शक्तिमुब्दोधयति। तत्प्रभावेणैव चालसाः सव्यापाराः दुर्बला बलवन्तः अविचारकाः विचार चतुराश्च सम्पद्यन्ते। जगतः सर्वोऽपि व्यापार आवश्यकता प्रसूत एव। याद्यवश्यकता दिनानुदिनं नैधैत, यथावस्थितमिदं जगत् पदपति पुरतो न स्पन्देत। प्रतिदिनं वर्धमाना जनसंख्याऽऽवश्यकतां वर्द्धयन्ती संहार कराण्यस्त्राण्यपि समुत्पादयति। अतः केनापि साधुसमर्थितमिदं यद् –

आविष्कारा आवश्यकतया जन्यन्ते।

आर्य समाज के दसवें नियम की व्याख्या

"सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।"

व्याख्या :– समाज में सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए इसका अभिप्राय है कि मनुष्य उस समूह के साथ चले उसका अंग बनकर रहे जो सबके लिए हितकारक नियमों को प्रस्तावित करता है अर्थात् सबका समान हित चिंतक हो। व्यक्ति को समाज में रहना है तो उसे समाज का हित समाज की भलाई में वह अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के हितों के लिए संकल्पित हो। उसे स्वेच्छाचारी नहीं होना है तभी वह प्रत्येक हितकारी नियम के पालने में स्वतंत्र रह सकता है। प्रत्येक हितचिंतक, हितवाहक नियम व्यवस्था में व्यक्ति अपनी प्रामाणिकता अवश्यमेव प्रस्तुत करे, नियम कानून को माने। हितकारी नियमों को न मानने से उस व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा कतई नहीं हो सकती।

वास्तव में नियम उसे कहते हैं जो व्यक्ति की जीवन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाये। सामाजिक व्यवस्था में रोजी–रोटी का प्रश्न भी है, अनेक प्रकार के संस्कारों की व्यवस्था भी है। समाज में व्यक्तिगत रूप से सुसंस्कारवान होना प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता है जो शोभनीय है जैसा व्यक्ति होगा वैसा ही समाज होता चला जायेगा। व्यक्ति का वैज्ञानिक दृष्टिकोण वैज्ञानिक चिन्तन समाज को प्रभावित करता है। हम अच्छे समाज का निर्माण अच्छे व्यक्तियों के घटकों से कर सकते हैं। व्यक्ति 5 यम अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह तथा पांच नियम अर्थात् शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान धारण करता हुआ समाज को प्रभावित करता है। 'यथा राजा तथा प्रजा' के स्थान पर अब प्रजातंत्रवाद में 'यथा प्रजा तथा प्रशासक' के रूप में समादृत होना है। यदि प्रजा संस्कारवान, आचारवान, सभ्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाली है तो जो चुनाव में प्रशासक आयेंगे तो हमारी राज्य की व्यवस्था सुव्यवस्थित होगी। यदि प्रशासन में भ्रष्ट चुने हुए प्रतिनिधि होंगे तो सामाजिक व्यवस्था चरमरा जायेगी। प्रत्येक प्रतिनिधि अपने समाज की तो उपज हैं, जैसा समाज होगा प्रतिनिधि भी लगभग वैसे ही होंगे। अतः आवश्यकता है जन–मानस को बदलने की, समाज में परिवर्तन लाने की।

अभी हाल में समाज में मुट्ठीभर एक खाप ने अपने तथाकथित रण–बांकुरों को आदेश दिया कि प्रेम–विवाह के युगल को फना कर दो और उन्होंने अपनी ही बहनों का प्रेम विवाह के कारण उनका खून कर दिया। उनकी मानसिक उत्तेजना इतनी प्रबल हो गई थी कि उन्हें कत्ल के बाद कोई भी मलाल नहीं हुआ, पश्चाताप नहीं हुआ। उनके कथनानुसार इज्जत की खातिर उन्होंने यह कुकृत्य किया। उन्हें यह पता होना चाहिए कि किसी का कत्ल करना उतना ही दंडनीय अपराध है जितना आत्महत्या करना। हर व्यक्ति राज्य का है। अतः आत्महत्या भी अपराध है। किसी की हत्या कर डालना निरंकुशता है क्योंकि तथाकथित अपराधियों ने 'सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए' में अपनी आस्था मानसिकता नहीं बनाई हुई थी। खाप का यह हितकारी नियम नहीं है कि किसी का कत्ल किया जाये या आदेश पारित करे। यह तो एक जघन्य अपराध है और यह अपराध बोध उस नियम को तोड़ता है – 'प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।'

आचरण की सभ्यता में यह नियम – 'सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें, ये कितना सटीक, उपादेय और श्रेष्ठ है। वास्तव में यह नियम सदैव प्रासांगिक रहेगा जो सर्व कालों में निरंतर उद्बोधन देता रहेगा। प्रकाश स्तम्भ की भांति सकल विश्व के राहगीरों का पथ–प्रदर्शक बना रहेगा। व्यक्ति और समाज का इस नियम रूपी मंत्र में सामंजस्य बोध है। मानवीय प्रशस्ति है।

– व्याख्याकार – बाबूराम शर्मा 'विभाकर'
52/2, लाल क्वार्टर, गाजियाबाद (उ. प्र.)
मो.:–9350451497

स्वामी दयानन्द का 145वाँ जयन्ती समारोह भव्यता के साथ मनाया
स्वामी दयानन्द ने संस्कृति के डूबते जहाज को बचाया

ऐसे समय में जब देश पराधीन था, अज्ञान, पाखण्ड और कुरीतियों का बोलबाला था तब दयानन्द ने राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद किया, वह दयानन्द ही थे जिन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य, स्वदेशी एवं स्वभाषा का मंत्र दिया। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने आर्य समाज बुलानाला में स्वामी दयानन्द जयन्ती के अवसर पर आयोजित मण्डलीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ उपप्रधान श्री रमाशंकर आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने प्रखर राष्ट्रवाद का आह्वान कर हमारी संस्कृति के डूबते जहाज को बचाया।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने बतलाया कि दयानन्द ने सांस्कृतिक पुनरुत्थान तथा राष्ट्र निर्माण की नींव रक्खी।

पूर्व सभासद श्री लीलाराम सचदेवा ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने 'वेदों की ओर लौटने' का और उसे आत्मसात करने का संदेश देकर विश्व को चमत्कृत कर दिया।

आर्य विदुषी डॉ. गायत्री आर्या ने बतलायाकि स्वामी दयानन्द ने स्त्री–पुरुषों की समानता तथा दलितोत्थान की नींव रखी।

अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री श्रीनाथ सिंह ने बतलाया कि दादा भाई नौरोजी तथा लोकमान्य तिलक ने स्वामी दयानन्द की स्वराज्य की भावना को आत्मसात किया था। प्रारम्भ में विषय प्रवर्तन प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया।

इस अवसर पर डॉ. विशाल सिंह, बृजभूषण सिंह, एस.एन. प्रसाद कुशवाहा, प्रतिभा सिंह, हरिहर प्रसाद सेठ, हेमेन्द्र श्रीवास्तव, रणजीत सिंह, विवेक सिंह एडवोकेट, प्रेमचन्द्र आर्य, हेमा आर्या, विभा आर्या व श्री राधेश्याम आर्य आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, तदुपरान्त श्री रमेश जी एवं लल्लन आर्य ने स्वामी दयानन्द जी के योगदान पर सुमधुर भजन कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। अतिथियों का स्वागत श्री विवेक सिंह तथा बृजभूषण सिंह ने किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने किया।

आर्य समाज कोसीकलां मथुरा में धूमधाम से मनाया गया आर्य समाज स्थापना दिवस

दिनांक 6 अप्रैल, 2019 को आर्य समाज, कोसीकलां मथुरा में आर्य समाज स्थापना दिवस हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सैकड़ों लोगों ने पधार कर महर्षि दयानन्द के मानव जाति पर किये गये उपकारों को श्रवण किया। प्रातः 9.30 बजे से विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। तदुपरान्त स्वामी चेतनानन्द जी महाराज के प्रवचनों ने श्रोताओं का मार्ग दर्शन किया। इस अवसर पर दिल्ली से पधारे प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री बालकिशन जी के भजनों ने कार्यक्रम को मधुरता प्रदान की।

इस अवसर पर एक निःशुल्क स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन भी किया गया जिसमें लगभग 400 मरीजों का परीक्षण किया गया तथा दवा आदि दी गई। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज कोसीकलां के प्रधान श्री अमर सिंह जी, मंत्री श्री नन्द किशोर शास्त्री, श्री ओम प्रकाश संरक्षक श्री विजय कुमार जी आर्य प्रबन्धक, श्री महेश कुमार आर्य, श्री अशोक कुमार आर्य, श्री सत्य प्रकाश आर्य, डॉ. योगेश आर्य, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री राजेन्द्र आर्य एवं छोटू पंडित का विशेष सहयोग रहा।

– विजय कुमार आर्य,
प्रबन्धक आर्य समाज धर्मशाला

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़, जालन्धर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। पुरोहित आर्य समाज के सिद्धान्तों के अनुसार सभी वैदिक संस्कारों की योग्यता रखता हो। मासिक दक्षिणा योग्यतानुसार दी जायेगी। आवास की निःशुल्क व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जायेगी। यदि विवाहित हो तो अच्छा रहेगा।

– डॉ. इन्द्र कुमार शर्मा (संरक्षक), मो.:–9878798834
सुमित महाजन (मंत्री), मो.:–9888143399

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के युवा भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य के पिताश्री चौ. धर्मवीर सिंह आर्य का आकस्मिक निधन

पैतृक गांव छाछरी, जिला–बिजनौर में आयोजित शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पूर्व गन्नामंत्री स्वामी ओमवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आर्य तपस्वी महात्मा सुखदेव जी दिल्ली, पं. नरेश दत्त आर्य आदि के अतिरिक्त अनेक लोगों ने दी श्रद्धांजलि

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य विष्णुमित्र मेदार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ शांति यज्ञ

आर्य जगत् के प्रसिद्ध लोकप्रिय एवं ओजस्वी भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य जो देश–विदेश में विख्यात हैं उनके पूज्य पिताश्री चौ. धर्मवीर आर्य का गत 14 अप्रैल, 2019 को हृदयगति रूक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन उनके निवास स्थान ग्राम–छाछरी, जिला–बिजनौर में 18 अप्रैल, 2019 को आयोजित की गई। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य विष्णु मित्र मेधार्थी द्वारा शांतियज्ञ बड़ी कुशलता के सम्पन्न कराया गया। उन्होंने बीच–बीच में जीवन एवं मृत्यु के सम्बन्ध में सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए उपस्थित जनसमूह को विशेष रूप से ज्ञान लाभ कराया। यज्ञ के उपरान्त श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, पूर्व गन्नामंत्री स्वामी ओमवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, आर्य तपस्वी महात्मा सुखदेव जी दिल्ली के अतिरिक्त पं. नरेश दत्त आर्य, श्री टीकम सिंह आर्य भजनोपदेशक, किसान नेता चौ. शूरवीर सिंह, चौ. महेन्द्र सिंह, महाशय तेजपाल सिंह भजनोपदेशक, श्रीमती सुलभा शास्त्री हापुड़, श्री योगेन्द्र आर्य गंगोह, श्री देवेन्द्र दत्त सत्यार्थी, श्री आनन्द प्रकाश त्यागी मेरठ, श्री आर.पी. सिंह मेरठ, श्री प्रवीण चोपड़ा कैथल, श्री मुदित आर्य कीरतपुर, श्री अनिल आर्य सहारनपुर, श्री कुशल आर्य, श्री भीष्म आर्य भजनोपदेशक, श्री दिनेश आर्य एवं नीलम आर्य शामली, मा. ऋषिराज बिजनौर,

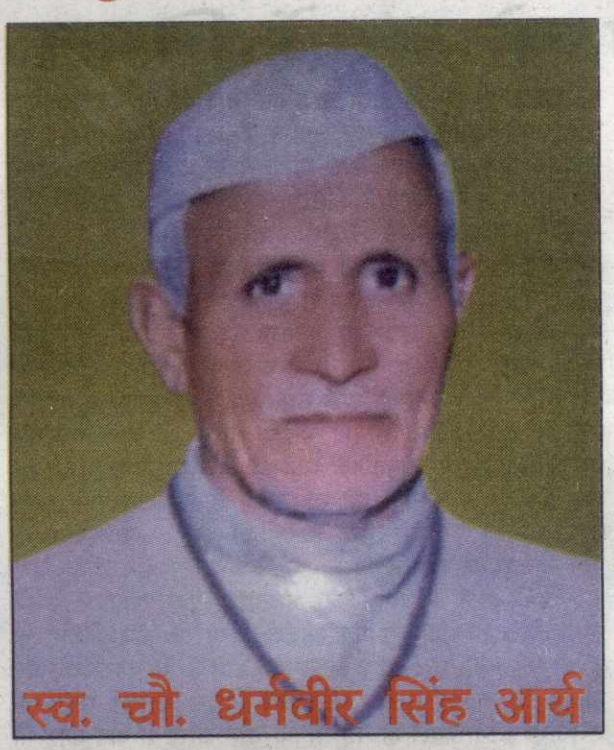

स्व. चौ. धर्मवीर सिंह आर्य

श्री धर्मेन्द्र आर्य छपरौली आदि ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि श्री धर्मवीर सिंह जी का जीवन सफल हुआ क्योंकि उन्होंने श्री कुलदीप सिंह आर्य के रूप में एक ऐसे पुत्र को जन्म दिया जिनकी ख्याति देश–विदेश में फैल रही है और आज कुलदीप आर्य की वजह से श्री धर्मवीर सिंह को हजारों लोग इसलिए जानते हैं कि वे कुलदीप आर्य के पिता हैं। इसके साथ–साथ उदीयमान युवा भजनोपदेशक श्री मोहित शास्त्री के वे दादा जी भी थे। कुलदीप जी ने इस मंत्र को चरितार्थ कर दिया कि वे अपने पिता के अनुवर्ती हैं।

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचंवदतु शन्तिवान्।।

स्वामी ओमवेश जी ने कहा कि श्री धर्मवीर सिंह जी को गांव के लोग धर्म सिंह के नाम से भी सम्बोधित करते थे। श्री धर्मवीर सिंह अपनी बात के अत्यन्त पक्के थे। जो एक बार जबान से उन्होंने कह दिया उस पर वे हमेशा दृढ़ रहते थे। उन्होंने कहा कि जबान का पक्का व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करता है। उनके निधन पर श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि उनके जाने से आर्य समाज छाछरी का एक मजबूत स्तम्भ गिर गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ. प्र. के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने श्री धर्मवीर जी को आर्य समाज का अत्यन्त कर्मठ कार्यकर्ता बताया तथा उनकी प्रशस्ति करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

अन्त में श्री कुलदीप आर्य ने सभी उपस्थित महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि इस सभा में आर्य समाज के पूज्य संन्यासीगण, गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा हमारे परिवार के जो भी व्यक्ति मौजूद हैं वे सभी हमसे बड़े हैं और मैं सबसे छोटा हूँ। अपनी जीवन यात्रा में और आर्य समाज के प्रचार–प्रसार में अगर मैं अपने पथ से कभी विचलित होने लगूँ तो आपलोग मुझे संभालें जिससे मैं सुपथगामी हो सकूँ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।